

समाधान की आवश्यकता : जीवन विद्या -सह-अस्तित्ववाद

हमारी अभी की वर्तमान स्थिति और एक विकल्प की आवश्यकता :

- क्या आप वैसे “ हैं” -जैसा आप सही में “चाहते” हैं?
- क्या आपको पता है के आप “चाहते” क्या हैं?
- क्या आप आपके “जीने का प्रयोजन” जानते हैं?

हमारी पूरी जिंदगी बीत जाती है लेकिन हमारी अपेक्षाएं कभी पूरी होती दिखाती नहीं और ना हमारे सभी सवालोकें उत्तर हमें मिलते हैं । हम कहींभी हो , कोईभी हो , लेकिन इस बात में हम सब एक जैसेही हैं - कि हम सभी के पास ऊपर लिखे हुए प्रश्नों के सही समाधान नहीं है .।

हम अपने आप से यह दो सवाल पूछ सकते हैं :

- क्या हम मानवोंने दुसरे मानवोंके साथ अब तक क्या किया ?
- क्या हम प्रकृति को ठीक रख पाए ?

इनके उत्तर हमें समाधानित नहीं कर पाते .आज हम विज्ञान-तकनीकी से प्राप्त सुख-सुविधाओं का लाभ तो ले रहे हैं लेकिन हम आज क्या दिखता है :

- प्राकृतिक समस्या : असंतुलन - ग्लोबल वार्मिंग
- सामाजिक समस्या : परिवार में टूटन, पारिवारिक मूल्यों का अवमूल्यन ,मानवीय संघर्ष,धार्मिक संघर्ष
- आर्थिक समस्या : आर्थिक विषमता ,बेरोजगारी
- वैयक्तिक समस्या : जीवन की निरर्थकता ,सुख की क्षणिकता

ऐसे लगता है के हम एक काली दीवाल के सामने खड़े है और आगे कुछ रास्ताही नहीं दीखता । आज इसका कोईभी समाधान परिभाषित होते हुए नहीं दिखता, ना हि समझ में आता है । अगर है भी , तो केवल एक “विकल्प” मात्र और वह भी किसी एक व्यक्ति की राय के स्वरूप में । ऐसी परिस्थिति में हममे से बहुसंख्य तो ऐसे मान बैठते है की इसका कोई समाधान हो भी नहीं सकता । या है भी , तो वह “एक विचारधारा” हैं, जो हमको पत्थर युग में ले जायेगी। ऐसे निराशाजनक परिस्थितिमे होते हुए भी, जब हम अपने अन्दर झांककर देखते है, तो हमें यह स्वीकृत भी नहीं, के इसका कुछ समाधान नहीं हैं । हम सब सुखी होना चाहते है । हममें समाधान की अपेक्षा बनीही रहती हैं । अतः हम सदैव द्वंद्व में रहते है ।

आजतक का मानव इतिहास अगर देखे तो हम अभी निम्नलिखित स्थिति में पहुंचे हैं :

- भय ,प्रलोभन, आस्था में जीना
- संग्रह , सुविधा , भोग के साथ जीना
- “चैतन्य” या “जीवन” में प्रिय , हित , लाभ दृष्टी का क्रियाशील होना
- इच्छा , विचार , आशा क्रियाओं का अथक प्रयोग

हममें चाहत तो है सही जीने की -जैसे निम्नलिखित बिन्दुओंमें लिखा हैं :

- सर्वतोमुखी न्याय होने , पाने की इच्छा
- सर्वतोमुखी समाधान होने ,पाने की इच्छा (प्रत्येक क्यों ? और कैसे ? का उत्तर);(“मानव धर्म एक”)
- परमसत्य द्रष्टा होने ,पाने की इच्छा
- व्यवस्था में जीने की इच्छा , समग्र व्यवस्था में भागीदारी की इच्छा

लेकिन ऐसा कैसे जिए, इसकी समझ या जीने में प्रमाण हम देख नहीं पायें ।

तो आपके लिए प्रश्न , के

क्या आपके पास कोई प्रस्ताव है जिससे इस धरती का हर एक मानव समाधानित होगा ?

या , दूसरे शब्दों में :

- क्या कोई विचारधारा / धर्म में इस वर्तमान समस्या का कोई समाधान है ?
- क्या कोई विज्ञान एवं तकनीकी में इस वर्तमान समस्या का कोई समाधान है ?
- क्या कोई अध्यात्मिक सोच में इस वर्तमान समस्या का कोई समाधान है ?

अगर है , तो स्वागत है - हम आपसे संवाद करके जानने की कोशिश करेंगे ।

अगर नहीं , तो आइये ‘ आपको निमंत्रित करते हैं - एक विकल्प को जानने के लिए - जिसका नाम है - मध्यस्थ दर्शन - सह-अस्तित्ववाद ।

विकल्प का संक्षिप्त परिचय :

हर मानव सुख और समृद्धिके साथ जीना चाहता है। हम में और हमारे सभी ओर जो भी समस्याएं हमें दिखाती हैं-चाहे व्यक्ति में ,चाहे पारिवारिक रिश्तोंमें ,चाहे समाजमें या फिर प्रकृति / पर्यावरण में हो - उसका मूल कारण हम मानव की “नासमझी” या “अज्ञान” है। सही में देखे तो अस्तित्व (जो सब “है”-प्रकृति आदि सब) सह-अस्तित्व में-व्यवस्था में है। अस्तित्व में कहींभी अंतर्विरोध या विरोधाभास नहीं है । जो भी विरोध या संघर्ष हमें लगता है वह सिर्फ हमारी नासमझी , हमारे अपूर्ण ज्ञान या भ्रम से है क्योंकि हम सह-अस्तित्व की वास्तविकता को समझे ही नहीं ।

अस्तित्व में व्यवस्था है , संगीतमयता है । अस्तित्व में मानव के सिवा हर इकाई स्वयं में व्यवस्था है और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते दिखती है । मानव भी व्यवस्था में होना-रहना चाहता है । और यह व्यवस्था बनानी नहीं है - यह “है” - इसको केवल समझना है और उसमें जीना हैं । एक सक्षम इकाई होने के नाते हर मानव स्वयं को, अपने जीवन को, पुरे अस्तित्व को ,जानना चाहता है, समझना चाहता है और सुखी होना चाहता हैं ।

मानव को समझनेके लिए एकमात्र मार्ग है - उसके चेतना को समझना - चैतन्य को समझना । मानव में के “चैतन्य इकाई” को ही “जीवन” कहा है । केवल एक चैतन्य इकाई ही दुसरे चैतन्य इकाई को समझ सकती है इसलिए सबसे पहले “स्वयं” को समझना होगा । आप भी यह समझ सकते हैं । क्योंकि यह हम, आप ,हम सबकी बात है । आपका यह पढ़ना , यह अपने आप में एक प्रमाण है , के आप एक चैतन्य इकाई हैं, मानव है ।

मानव न तो “यंत्र” है , न ही “उपभोगी वस्तु” है , न ही “संसाधन” हैं | मानव एक चैतन्य इकाई है और ज्ञान-अवस्था में गण्य है (प्रकृति की बाकी तीन अवस्था है -पदार्थ अवस्था , प्राण अवस्था और जीव अवस्था जो की सभी अपने में व्यवस्था है और एक दुसरे के पूरक है)

हर मानव समाधानित होना चाहता है , सुखी - समृद्ध होना चाहता है और वह ऐसा जी सकता है | मानव सही में सह-अस्तित्वस्वरूप है - पुरे अस्तित्व का द्रष्टा है | सह-अस्तित्व को समझ कर उसमें जीना उसकी आवश्यकता है | हमको , आपको और पूरी मानव जाती को सह-अस्तित्व में होना ही सहज है, प्राकृतिक है। यही सुख है | कोई भी मानव समझदारी या ज्ञान के बिना अपराध-मुक्त जी नहीं पायेगा |

हमारी सभी ओर जो समस्याएं हैं , व्यक्ति ,परिवार , समाज या प्रकृति किसी भी स्तर पर, वह केवल मानव कृत है। इसीलिए मानव में ही इसका समाधान है | इसीलिए मानव को समझना , मानवी आवश्यकताओं को समझना जरूरी है | यह समझदारी या ज्ञान से ही संभव है |

यह प्रस्ताव मानव का संपूर्ण अस्तित्व में अध्ययन करने का प्रस्ताव है।

अधिक जानकारी

जीवन विद्या शिविर: www.jeevanvidya.info |

मध्यस्थ दर्शन: www.madhyasth-darshan.info

लेख जिम्मेदारी – श्रीराम नरसिम्हन (in English) | विद्यार्थी | जून २०१२ | zshriram@gmail.com

हिंदी अनुवाद: हेमंत मोहरीर, नागपुर

मूल स्रोत: मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) - प्रणेता एवं लेखक: ए नागराज